सत्यध्वज

वर्ष - 15
अंक - 46

गुरूघासीदास एवं उनके सतनाम आन्दोलन पर आधारित एकमात्र अनियतकालीन हिन्दी पुस्तक

अक्टूबर, नवम्बर, दिसम्बर 2004
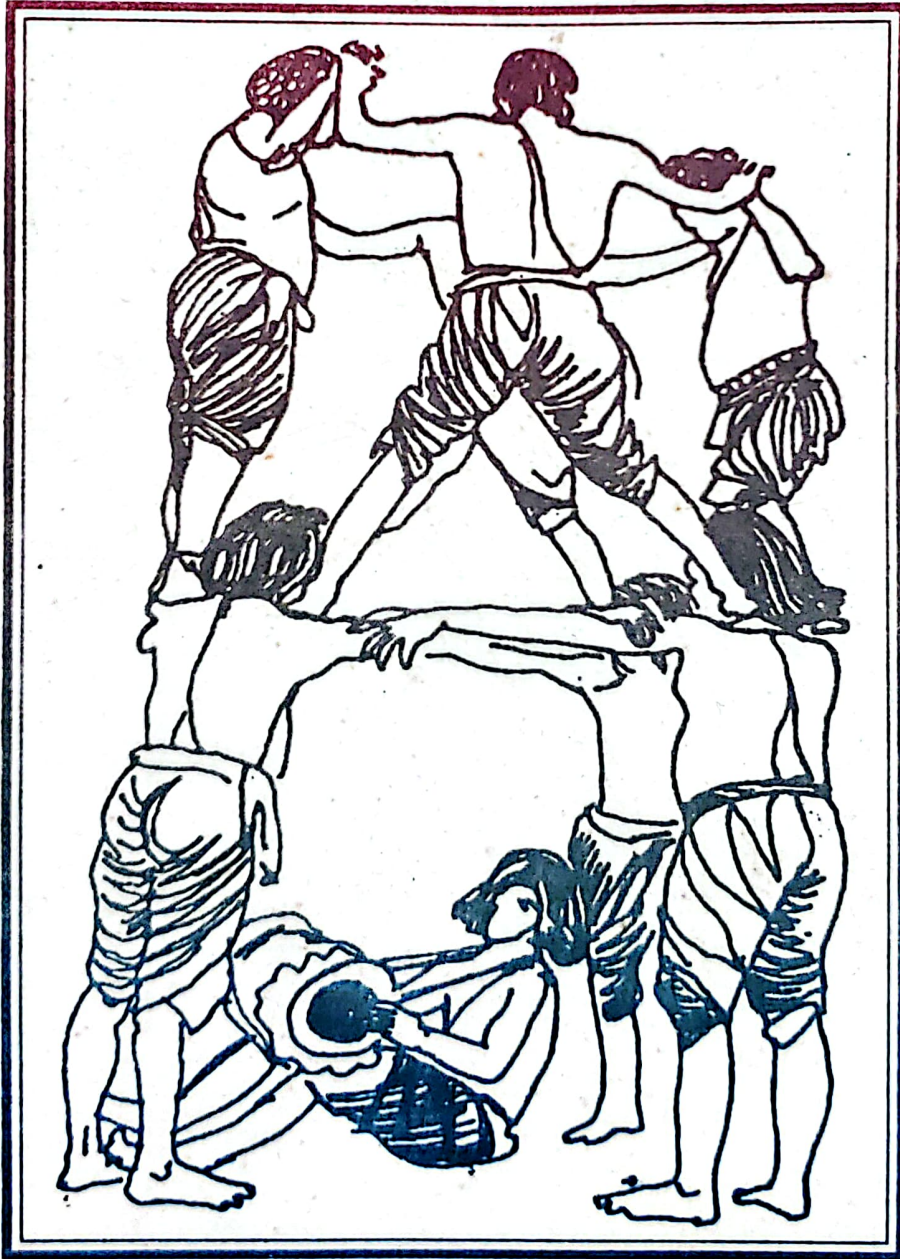
सम्पादक
दादूलाल जोशी 'फरहद'

सहयोग राशि
25 रूपये मात्र

Anant1984

सत्यध्वज

गुरुघासीदास एवं उनके सतनाम आन्दोलन पर आधारित
एकमात्र अनियतकालीन हिन्दी पुस्तक

अक्टूबर, नवम्बर, दिसम्बर - 2004
वर्ष-15 अंक-46

प्रतिनिधि एवं प्रचार-प्रसार मंडल

-: इस अंक में :-

दादूलाल जोशी ''फरहद'' मु. फरहद, पो. सोमनी जि. राजनांदगांव छत्तीसगढ़ द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित

✧ सत्यध्वज बुलेटिन अनियतकालीन और अव्यावसायिक

✧ सम्पादनप्रबंधन पूर्णतः अवैतनिक

टीप :- 1. सत्यध्वज में प्रकाशित रचनाओं में उल्लेखित विचार लेखकों के स्वयं के विचार हैं जो कि उनके समझ और ज्ञान पर आधारित है। उन विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

2. सत्यध्वज का प्रकाशन गुरू घासीदास जी के व्यक्तित्व और कृतित्व से संबंधित साहित्यिक अभाव की पूर्ति का प्रयास मात्र है। अतएव इस संबंध में किसी व्यक्तित्व संस्था अथवा समूह के द्वारा उठाये गये किसी भी तरह के विवाद स्वीकार्य नहीं है।

पत्र व्यवहार का पता

दादूलाल जोशी ''फरहद''
संपादक सत्यध्वज पत्रिका
मु. फरहद, पो. सोमनी
जि. राजनांदगांव छत्तीसगढ़
फोन : 07744-220814
मो. नं. : 9302835463

सहयोग राशि मात्र-25 रूपये

सम्पादकीय

सत्यध्वज और हमारा उद्देश्य

इस अंक के साथ ''सत्यध्वज'' के प्रकाशन का पन्द्रहवाँ वर्ष पूरा हो रहा है। ''सत्यध्वज'' का प्रकाशन सन् 1991 में शुरू हुआ था। तब से यह पत्रिका कभी रेंगती, कभी सरपट भागती , कभी लड़खड़ाती, ठहरती और तरह-तरह के आघातों तथा अभावों को झेलती पुनः अपनी गति से बढ़ती हुई दिसम्बर सन् 2004 ई. तक पहुंच कर अपनी उम्र के पन्द्रह वर्ष पूरा कर चुकी है। यहाँ तक का सफर तय करने में, वार्षिक सदस्यों, प्रतिनिधियों सम्पादक मण्डल के सदस्यों; दान दाताओं एवं रचनाकारों ने जो सहयोग दिया; वह स्तुत्य है; अविस्मरणीय है। जिन लोगों ने सत्यध्वज और हमारे प्रति अच्छे खयालात रखते हैं और इसके महत्व को समझते हुए इसके निरंतर छपते रहने की कामना और सहयोग करते रहे हैं; उनके प्रति हम हृदय से आभारी हैं; तथा जो महानुभाव सत्यध्वज और हमसे घृणा करते रहे तथा इसके प्रकाशन को बंद हो जाने की कामना तथा विविध तरह से अवरोध पैदा करते रहे ; उनको भी हम हृदय से धन्यवाद देते हैं।

इतनी लम्बी अवधि तय कर लेने के बाद हम जरूरी समझते हैं कि सत्यध्वज के प्रकाशन के उद्देश्यों पर थोड़ा सा प्रकाश डाला जाये। जिन उद्देश्यों को लेकर हमने सत्यध्वज के प्रकाशन को जारी रखा है - वे इस प्रकार हैं -

1. गुरूघासीदास और उनके सतनाम आन्दोलन के मूल रहस्यों को समझने का प्रयास किया जावे। उनमें कितनी प्रासांगिकता है; उसे सामने लाया जावे। गुरू बाबा के द्वारा स्थापित धार्मिक,सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था के उपादानो का विश्लेषण किया जावे।

2. प्रायः यह देखा गया है कि प्रतिवर्ष दिसम्बर माह में गुरूघासीदास जंयती के कार्यक्रम होते हैं; किन्तु बाद के जनवरी से नवम्बर तक ग्यारह महीने समाज में, खामोशी रहती है। हम चाहते हैं कि गुरू बाबा के कृतीत्व और व्यक्तितत्व पर वर्ष भर चिन्तन, मनन और अनुशीलन का कार्य होता रहे। यह केवल नियमित छापने वाली पत्रिका के द्वारा बखूबी किया जा सकता है।

3. सतनामी समाज पूरे भारतवर्ष के प्रायः प्रत्येक प्रान्त में निवास कर रहा है। अतः उनसे सम्पर्क सूत्र बनाये रखने का प्रयास किया जावे। उन सबको एकता के बन्धन में बांधने

की कोशिश की जावे और उसके लिए ''सत्यध्वज'' पत्रिका बहुत कारगर हो सकती है ।

4. सतनामी समाज के लेखकों, कवियों, चिन्तको और समाजसेवियों के विचारों को छापकर जन-जन में उसे प्रचारित-प्रसारित करना तथा उनकी लेखन-क्षमता को बढ़ाकर उन्हें कुशल साहित्यकार बनाने में मदद देना ।

5. जिस प्रकार सभी धर्म गुरूओं, महात्माओं और संतों जैसे :- आशाराम बापू, पं. श्रीरामशर्मा, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी सत्यानन्द सरस्वती, पं. मिहीलाल शर्मा, गौतम बुद्ध इत्यादि के व्यक्तित्व और कृतीत्व पर आधारित पत्रिकाएं निरंतर प्रकाशित हो रही है जिनमें, ''ऋषिप्रसाद'' अखंडज्योति, ''विवेक ज्योति'' ''योग विद्या'' ''साधना'' एवं ''धम्म दर्शन'' आदि है । इसी तरह जितने भी संत इस देश में हुए और वर्तमान में हैं ; उन सभी के दर्शन और चिन्तन को जन-जन में फैलाने हेतु पत्रिकाओं एवं पुस्तकों का निरंतर प्रकाशन हो रहा है । इसी परिपाटी में हमारा भी मकसद, गुरूघासीदास के व्यक्तित्व और कृतीत्व पर आधारित पत्रिका और पुस्तकों का निरंतर प्रकाशन करना है । इसी उद्देश्य से ''सत्यध्वज'' पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है । इनके अतिरिक्त और बहुत से उद्देश्य हैं ; जिनकी चर्चा करके हम इस लेख को अधिक विस्तार नहीं देना चाहते ।

लेकिन दुख का विषय है कि हमारे समाज के कुछ बुद्धिजीवी इन महान और उपयोगी उद्देश्यों को समझने में विफल रहे हैं । वे अपने मस्तिष्क में तरह-तरह की नकारात्मक कल्पना हमारे बारे में तथा सत्यध्वज के बारे में कर लिये हैं और उसी के आधार पर सत्यध्वज के प्रकाशन को देखते हैं । परम्परागत रूप में वे सोचते हैं कि सत्यध्वज को पैसा कमाने के लिए छपवाया जा रहा है । सत्यध्वज के प्रकाशन करके सम्पादक जी सतनामी समाज का नेता बनना चाहता है, वह किसी राजनीतिक पार्टी से टिकट लेकर चुनाव लड़ना चाहता है । वह समाज में सबसे बड़ा आदमी बनना चाहता है तथा वह अपना ''इमेज'' बनाना चाहता है आदि आदि । इस तरह की कल्पना करना और विचार रखना सर्वथा गलत है । सत्य बात तो यह है कि किसी पत्रिका को छाप लेने से कोई आदमी महान नहीं बन सकता । कोई राजनीतिक पार्टी ऐसे सम्पादक या लेखक को कभी भी चुनाव में टिकट देकर खड़ा नहीं करती है । अव्यावसायिक पत्रिका से धन नहीं कमाया जा सकता है; उल्टे अपने पास का धन उसमें खर्च हो जाता है । कुछ लोग तो सम्पादक के ऊपर आरोप लगाते समय अपने विवेक का थोड़ा भी इस्तेमाल नहीं करते हैं । वे सम्पादक को घास-पात समझकर मन मर्जी से भ्रष्टाचारी तक कह

देते हैं। इन बातों से हमारे मन में दुख तो जरूर होता है किन्तु हम किसी से नाराज नहीं होते हैं क्योंकि हम भी सतनामी समाज में पैदा हुए हैं। अतः इस समाज के तथा लोगों के मनोविज्ञान को अच्छी तरह से समझते हैं।

सत्यध्वज पत्रिका के प्रकाशन से सतनामी समाज का बहुत बड़ा भला होने वाला नहीं है तथा सत्यध्वज के प्रकाशन को बंदकर देने से सतनामी समाज का कुछ भी नुकसान नहीं होने वाला है। दरअसल हमारी इच्छा है कि जहाँ साहित्य क्षेत्र में कुछ भी नहीं हो रहा है वहाँ कुछ न कुछ तो होना ही चाहिए। भले ही वह साधारण हो या मामूली हो।

हमारी एक और इच्छा शुरू से ही रही है कि सत्यध्वज में छपने वाले सभी लेखकों और कवियों को पुरस्कार के रूप में नकद राशि दी जावे। प्रत्येक लेखकों को कम से कम पचास रूपये का पुरस्कार (पारिश्रमिक) हर बार दिया जावे किन्तु सत्यध्वज की सदस्य संख्या कम होने के कारण पर्याप्त मात्रा में, सदस्यता राशि जमा नही हो पाती है; जिसके कारण हम लेखकों को पुरस्कार नहीं दे पाते हैं। आज समाज में कलाकारों और समाज सेवियों को सम्मानित पुरस्कृत किया जाता है किन्तु लेखकों और कवियों को नहीं किया जाता है। अतः हम सत्यध्वज पत्रिका की ओर से उन्हें सम्मानित पुरस्कृत करना चाहते हैं।

बात यह नहीं होनी चाहिए कि सत्यध्वज उत्कृष्ट है या साधारण, स्तर ऊंचा है या नीचा, यह मोटा है या पतला, यह तीन महीने में छपता है या छः महीने में ; दरअसल बात यह होनी चाहिए कि इस विशाल समाज में, एकमात्र ''सत्यध्वज'' ही तो है जो पूरे विश्वास के साथ पन्द्रह वर्षों से छप रहा है, अर्थात् '' न मामा से काना मामा अच्छा है'' इस तरह की सकारात्मक सोच सबको सही दिशा में ले जा सकती है।

(जय सतनाम)

दादूलाल जोशी ''फरहद''
सम्पादक ''सत्यध्वज''

पाठको के पत्र

आदरणीय जोशी भैया जी स्थान भांनसोज 15-10-04

सत्यध्वज पत्रिका के अंक 41, 42, 43, 44, प्राप्त हुआ है लगभग सभी अंको का वितरण हो चुका है। सत्यध्वज पत्रिका के इस वर्ष के सभी अंको का मैने अध्ययन किया है सभी लेख सराहनीय है। अंक 41 में सतनामियों का संक्षिप्त इतिहास, गावों की ओर साहित्यिक अभियान बड़ें ही रोचक प्रेरणादायी है। अंक 42 में आपका सम्पादकीय गांव गांव में सत्यध्वज साहित्य मंच गठन का सुझाव, प्रकृति के सानिध्य में गुरू घासीदास जी, क्रांतिवीर नकुल देव ढीढ़ी जी लेख सराहनीय हैं। सतनाम धर्म के प्रवर्तक गुरू घासीदास जी ''कविता संग्रह'' आदि सभी प्रस्तुति प्रशंसनीय है कुछ पाठकों का कथन था कि पत्रिका के स्तर में कुछ गिरावट आई है। सो मै इसका कारण पाठकों को भलिभांति बता दिया हूँ। जोशी भैया अभी सब ठीक हैं।

गणेश राम मिरी
मु.पो.-भानसोज, जि.रायपुर

आदरणीय जोशी जी

आपके द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक ''सत्यंध्वज'' पत्रिका हमारे लिए हमेशा ''नित-नये'' संदेश लेकर आती है। हम जिस प्रश्न का हल जानना चाहते हैं, आप उसे सत्यध्वज पत्रिका के माध्यम से पूरा कर देते है। यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है।

हमें आप पर गर्व है कि आप परेशानियों का सामना करते हुए पत्रिका को लगातार प्रकाशित किये जा रहें है। मैं एक आत्मचिंतन ''समाज एवं गुरूओं के नाम एक संदेश'' लेख प्रेषित कर रहा हूँ। मैं आपका अभारी रहूँगा यदि आप मेरे इस लेख को सत्यध्वज पत्रिका मे स्थान देते हैं तो ? वैसे मुझे यकीन है आप पत्रिका में स्थान जरूर देगें।

मैं अगले अंक के लिए भी आत्मचिंतन प्रेषित करूँगा। मैं चाहता हूँ कि आपको प्रत्येक पत्रिका के लिए अपना आत्मचिंतन प्रेषित करूँ अगर आप चाहें तो।

विष्णुप्रसाद बंजारे (ड्राफ्टमेन)
जी.एच.आई. लिमिटेड, भोपाल

परम आदरणीय जोशी जी,

आद दिनाँक 26-11-04 को मुझे आपके द्वारा प्रकाशित पत्रिका ''सत्यध्वज'' का जुलाई-अगस्त-सितम्बर 2004 अंक मिला जिसमें से मेधावी छात्रा वाला कालम मुझे काफी पसन्द आया है । और मै समझता हूँ कि आपने सराहनीय कार्य किया है। क्योंकि आपने तो इसे जन-जन तक पहुँचाने का कार्य किया है । मेधावी छात्रा से मुलाकात के लिए आपने अपना अमूल्य समय निकाला इसके लिए मै आपको धन्यवाद दूंगा । साथ ही साथ मै इस पत्रिका के माध्यम से कुमारी संगीता पात्रे को भी बधाई व शुभकामनाएं देना चाहुगां जो कि हमारे समाज में रहकर विशिष्ट उपलब्धि प्राप्त की है ।

दुसरी बात इस अंक में पाठकों के पत्र वाले कालम में पवन कुर्रे भिलाई के द्वारा लिखा गया पत्र में आपके प्रति कटु शब्दों का प्रयोग किया गया है । इसमें क्या सही है और क्या गलत है मै नहीं जानता । पर मुझे ये शब्द अच्छे नहीं लगे । इसमें उन्होंने आपको रचना छापने के लिए पैसा मांगते हुये लिखा है । मै पत्रिका के माध्मय से बताना चाहता हूँ कि ये बात निहायत ही गलत है क्योंकि मैने भी इस पत्रिका के माध्यम से अपनी कविता छपवाई है । पर मैने आज तक सम्पादक महोदय को पैसा नही दिया और सम्पादक महोदय के द्वारा मुझसे पैसा की मांग नही किया गया ।

लोचन प्रसाद लहरे (बबलू)

वन कालोनी, सुभाष वार्ड अन्नपूर्णा पारा, कांकेर (छ.ग.) फोन : 223892

महोदय जी !

हमारी संस्था विगत 4 वर्षों से राजधानी भोपाल में तीन दिवसीय भव्य सतनाम मेला का आयोजन प्रतिवर्ष दिनांक 16-17 व 18 दिसम्बर को करती आ रही है । जिसकी विशेषता यह है, कि 18 दि.के दिन समाज के गरीब वर्गों को सहायता पहुँचाने के उद्देश्य से मात्र 100 रू. में सस्ती शादी मुहैया करती हैं एवं असहाय पीड़ीतों, वृद्ध, विधवा एवं निःशक्त जनों को हजारों की संख्या में उनके उपयोगी सामग्री, बर्तन, कपड़े, कम्बल, चशमा, छड़ी, बैसाखी इत्यादि उपकरण निःशुल्क प्रदान करती है । इच्छुक व्यक्ति हमारे उपरोक्त पते पर पत्राचार द्वारा फोटो सहित बायोडाटा, जानकारी भेंज सकते हैं और विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकते हैं । इसमें सभी धर्म सम्प्रदाय के आवेदक लाभ ले सकते हैं । मैं सत्यध्वज पत्रिका के नियमित सदस्य हूँ कृपया सूचना प्रकाशित करने की कृपा करेंगे ।

अत्यंत ही आदर सहित

एम. आर. बंजारे ''बाबा''

प्रांतीय अध्यक्ष

स्व. मिनीमाता नारीउत्थान एवं बाल वृद्ध विकलांग सेवा संस्थान भोपाल (म.प्र.)

समाज एवं गुरूओं के नाम एक संदेश
(सच्चाई जो छिपी हुई है)

वर्तमान समय में सतनामी जाति का विस्तार मूलतः छत्तीसगढ़ क्षेत्र के बिलासपुर, रायपुर, दुर्ग, राजनांदगांव, बस्तर एवं रायगढ़ जिलों में हुआ है जहां सतनामियों की संख्या लाखों में पहुँच चुकी है, इसके अलावा लोग मध्यप्रदेश, असम, बिहार, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश, कलकत्ता, पंजाब और सिंध आदि प्रांतो में भी पाये जाते हैं।

सतनामी जाति के लोग स्वावलंबी प्रवृति के होते हैं। वे शादी-विवाह, मरण दशगात्र जैसे सामाजिक क्रिया कर्म की सामाजिक रश्में स्वयं पूर्ण करते हैं। सतनामियों को हिन्दु धर्म में माना जाता है लेकिन इन लोगों का कार्य हिन्दु धर्म के अनुरूप नहीं होता है। तीज-त्यौहार में तो जरूर कुछ समानताएं है पर शादी विवाह, मरण, दशागात्र जैसे सामाजिक क्रिया कलापों में सतनामी स्वयं सतनामी समाज का पंडित होता है जिससे सतनामी लोग अपना पूजा-पाठ करवाते हैं, जब कोई आदमी मर जाता है तो समाज में मुंडन करने के लिए कोई नाई नहीं बुलाया जाता बल्कि वे लोग स्वयं ही समाज वालों के द्वारा मुंडन का कार्य करवाते हैं। इसी तरह और अनेकानेक कार्य हैं जो सतनामी लोग स्वयं ही अपने आप करते हैं। बाबा गुरू घासीदास जी ने सतनामियों के लिए सात सिंद्धात बताये हैं जो निम्न है।

1. सतनाम पर विश्वास रखो
2. मूर्ति पूजा मत करो
3. मांशाहार मत करो
4. जाति भेद के प्रपंच में मत पड़ो
5. नशा सेवन मत करो
6. व्यभिचार मत करो
7. चोरी और जुआ से दुर रहो

इन सब बातों को देखने व सुनने से लगता है की यह सब बांते बिल्कुल ही हिन्दु धर्म से मेल नही खाती। इन्ही सब बातों के आधार पर सतनामी लोग हिन्दु धर्म में नहीं आते चूंकि हम लोगों का बहुतायत लोग विरोध करते हैं और हमारी सच्चाई को तोड़ मरोड़ कर पेश करने वालों की जनसंख्या ज्यादा है इस कारण हमारी सच्चाई लोगों तक नही पहुंच पाती और लोग हमें गलत समझते हैं। मगर प्रत्येक सतनामी यह जरूर मानता है कि उनका धर्म हिन्दु नहीं बल्कि सतनाम है। भले ही वह कानूनी नियम व कायदा कानून के उलझन में अपना धर्म सतनाम नहीं लिखता और टूटे मन से हिन्दु लिखता है। मगर एक दिन जरूर हम सतनाम

धर्म को राष्ट्रीय धर्म बनवाकर ही रहेंगे। इन कार्यों में हमारे राजनेता लोग अगर सच्चे मन से साथ दें तो बहुत ही जल्दी हमारा एक अलग धर्म व पहचान बन सकता है, इस कार्य में समाज के बुद्धजीवी लोग पहले से ही लगे हुए हैं, हमें आशा है जब भी समाज के लोगों की आवश्यकता होगी तो आप लोग जरूर आगे आकर पूरे तन, मन और धन से सहयोग देगें।

सतनामी समाज में आज तरह-तरह की बुराईयाँ देखने व सुनने में आती है, आज सतनामी जाति के सदस्य हीनता की भावना से ग्रसित है, इस जाति के बुद्धजीवी अर्थात जो नौकरी पेशा है, सामाजिक कार्य में संलग्न हैं, अच्छे खान-पान वाले हैं, अच्छे नेता हैं, अच्छे पढ़े लिखे हैं उनके समक्ष बहुत ही समस्याएं है उन्हें अन्य समाज में कोई भी सम्मान नहीं मिलता। अन्य समाज के लोग उन्हे निम्न स्तर के समझते हैं जबकि वे लोग अन्य समाज के लोगों से कई मामलों में श्रेष्ठ है। इनमें समझने वालों की गलती नहीं है हमारे समाज में से ही कुछ ऐसे लोग है जो समाज को यहां तक लाकर खड़ा कर दिये है। जिस तरह एक सड़ी मछली पूरे तालाब को गंदा कर देती है ठीक उसी तरह समाज के एक भी आदमी व औरत की खराब क्रिया-कलाप पूरे समाज को बदनाम कर देती है। और आज यहीं हुआ है। सभी बातों को बताना उतना उचित नहीं है क्योंकि मैं क्या कहने वाला हूँ यह सब आप लोग जाप व समझ गये होंगे। हमें यह सब मालूम है उसके बाद भी कुछ नहीं कर पा रहे हैं अगर इसी तरह कहीं चलते रहा तो वह दिन दूर नहीं जब पूरे सतनामी समाज अपना मुंह छिपायें किसी कोने में भीगी बिल्ली की तरह दुम दबाके छिपा बैठा रहेगा। हम जानते हैं आप और हम मिलकर समाज में फैल रहें इन बुराई एवं कुरीतीयों को उतना आसानी से दूर नहीं कर सकते क्योंकि लोग आप और हमको कुछ समझते नहीं है। इस समाज में तो आज हर कोई अपने आप को बड़ा समझने लगा है किसी को समाज की चिंता ही नहीं है और नहीं किसी का डर।

आज सतनामी समाज को इस दशा तक लाने में ज्यादातर जिम्मेदार अगर कोई है तो वह है गुरू परिवार। गुरू परिवार को जिस तरह समाज को आगे बढ़ाने का कार्य सौंपा गया था उस कार्य को वे लोग एक रत्ति (तनिक) भर नहीं कर पायें। धर्म गुरूओं में जाति के उत्थान एवं विकास के प्रति रूचि नहीं के बराबर पाई गई, इसीलिए आज सतनामी जाति में अनेक प्रकार की बुराईयां एवं कुरीतियाँ फैल रही है। खान-पान रहन-सहन और एक दुसरे को नीचा दिखाने की भावना आज दिन प्रति-दिन प्रबल होती जा रही है। अगर इन सब बांतो को जितने भी धर्म गुरू है वे लोग गंभीरता से लेते तो आज समाज की यह दशा व दुर्दशा नहीं होती। अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है समाज का पूरा बाग-डोर अभी भी धर्म गुरूओं के हाथों में ही है। आज भी समाज में गुरू परिवार के प्रति श्रद्धा व सम्मान है अगर चाहे तो गुरू

परिवार एक ही प्रयास से पूरे समाज को एक राह में ला सकते है। आज कहीं गुरू परिवार समाज को सही रास्ते में लाने के लिए दृढ़ संकल्प के साथ कार्य करना शुरू कर दे तो उनके साथ देने के लिए लोगों की कतार सी उमड़ पड़ेगी जरूरत है तो सिर्फ एक दृढ़ संकल्प एवं निष्ठा की। यह बात मैं गुरूजनों को ठेस पहुंचाने व उनका अपमान करने के लिए नहीं कह रहा हूँ मै तो सिर्फ आज उनको, उनके ताकत का एहसास कराना चाहता हूँ जो गुरू घासीदास जी ने उनके कंधो पर भार दिया है ? समाज को आगे बढ़ाने का। गुरू परिवार के हाथों में क्या ताकत है इसको एक उदाहरण देकर स्पष्ट करना चाहता हूँ। मान लिजिए हमारे बीच में से कोई भाई मांश, मच्छी खाता है ? आज के समय में वह भोपाल में खुले आम मछली मार्केट से मछली लेकर आता है और खुले आम घर में बनाकर खाता है क्योंकि यहां उसको किसी का भी डर नहीं है, क्योंकि वह सोचता है कि वह तो अपने गांव से दूर यहां आया है, गांव वालों को कैसे पता चलेगा की वह वहां क्या खा-पी रहा होगा। मगर वही आदमी कहीं गांव चले जाता है तो यहां जो खूले आम मछली लेकर बाजार से आता था वह वहां चोरी-छिपे लेकर आयेगा और इस तरह घर में चुपके से बनाकर खायेगा कि पास के दूसरे मकान वालों को तनिक भी खबर न लगे नहीं तो गांव वाले गुरू परिवार वालों को बुलाकर समाज से बहिस्कृत कर दिया जायेगा। वहीं आदमी यहां किसी को नहीं डरता था लेकिन वहां समाज व गुरू परिवार को डरने लगा। क्योंकि वह इतना तो जानता है कि उनका रहन-सहन, शादी-विवाह, मरण-दशगात्र आदि अनेक कार्य समाज के बगैर नहीं हो सकता।

इस तरह धर्म गुरूओं के हाथों में आज भी समाज में जो लोग गलत कार्य करते हैं, जो समाज के नियम व कायदा-कानून को नही मानतें है उनको दंडित करने का व उसे सुधारने का पूरा अधिकार उनके पास है। गुरू समाज का कर्णधार है समाज में बुराई फैलाने वालों के प्रति वह कुछ भी कदम उठा सकते हैं। और सबसे बड़ा हथियार उनके पास यह है कि वह गलती करने वालों को समाज से बहिस्कृत कर सकते है और लोग जानते है कि उनका जीवन बिना समाज के अधूरा है, जैसे बेटी लेना या देना बिना समाज के वह अपना जीवन यापन तो कर सकता है मगर शादी-विवाह, मरण जैसे सामाजिक कार्य अपने समाज के अलावा कहीं भी नहीं किया जा सकता। अंत में गलती करने वाले के पास कोई भी रास्ता नहीं बच पायेगा सिवाय समाज के नियम व कायदा-कानून को मानने के अलावा। अर्थात कहने का मतलब यह है कि डर तो सबको है, सब चाहते हैं कि वह समाज में रहे लेकिन यह तब और सिर्फ तब संभव है जब सिर्फ और सिर्फ धर्म गुरूजन आगे आकर इस कार्य को करें।

विष्णु प्रसाद बंजारे "ड्राफ्ट्रसमैन" भोपाल

समाजसेवी श्री मोहनलाल भतरिया

श्री मोहनलाल भतरिया जी एक ऐसे समाज सेवी हैं; जिन्होंने अपनी युवावस्था में ही सतनामी समाज के सर्वांगीण विकास के लिए प्रयास शुरू कर दिया था। उनके प्रयासों से पहली बार भिलाई नगर में, सेवारत सतनामी कर्मचारियों को एक सूत्र में जोड़कर ''भिलाई सतनामी समाज'' नामक संस्था की स्थापना की गई थी।

इस संस्था के माध्यम से वे अपने जुझारू साथियों के साथ मिलकर भिलाई नगर के सभी मुहल्लों में रहने वाले सतनामियों के बीच जाकर उनमें सामाजिक चेतना जागृत करने तथा उन्हें संगठित रहने की शिक्षा देते थे। सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए उन्हें सचेत करते थे। उनके प्रयासों से भिलाई नगर के केम्प-2 में सबसे पहला ''जैत खाम'' गड़ाया गया। बाद में खुर्सीपार और पांच रास्ता सुपेला में भी जैतखाम गड़ाया गया। सुपेला में जयंती समारोह का आयोजन सबसे पहले भव्य रूप में किया गया जिसमें म.प्र. के तत्कालीन मंत्री श्री धन्नालाल चौधरी एवं मिनीमाता जी अतिथि के रूप पधारे थे। उस समय यह नियम बनाया गया कि सभी मुहल्ले में स्थापित जैतखाम में पहले ध्वज चढ़ाकर वहाँ से सामाजिक लोग जुलुश बनाकर एक ही स्थान में एकत्रित होंगे। इस प्रकार सामूहिक रूप से एक ही स्थान में, सभा कार्यक्रम होने लगा। जिसके फलस्वरूप सतनामियों की विशाल संख्या एवं ताकत का अंदाजा दीगर समाज एवं राजनेताओं को हुआ।

भिलाई सतनामी समाज के द्वारा श्री भतरिया जी के प्रयासों से सतनामी समाज के गरीब छात्र-छात्राओं को प्रतिमाह आर्थिक सहयोग देने का काम शुरू हुआ ऐसे छात्र जो गरीब हैं और डॉक्टर, इंजीनियर की पढ़ाई कर रहे हैं; उन्हें प्रतिमाह पचहत्तर रूपये आर्थिक सहयोग दिया जाता था। यह सहयोग उनके विवाह होने तक दिया जाता था। इससे कई विद्यार्थी डॉंक्टर एवं इंजीनियर बन कर निकल सके थे।

श्री मोहनलाल भतरिया जी भिलाई इस्पात संयंत्र भिलाई में नौकरी करते थे तथा सुबह 10 बजे से शाम 4.30 बजे तक ड्यूटी करके लौटने के बाद समाज सेवा में लग जाते थे। बाद में वे राजनांदगांव जिले के गाँवों में तथा धमधा क्षेत्र के गाँवों में जाकर समाज को एक रहने, सामाजिक बुराईयों को दूर करने, बच्चों को स्कूल भेजने तथा साहूकारों से अधिक ब्याज में पैसा नही लेने के लिए जागृत करते थे। इस काम में लगे होने के कारण

पन्द्रह-पन्द्रह दिनों तक अपने घर नहीं लौट पाते थे। उनके समाज सेवा के कार्यों में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती जमुनादेवी का भरपूर सहयोग एवं समर्थन मिलता रहता था।

पैंसठ वर्षीय श्री मोहनलाल भतरिया जी आज भी भिलाई नगर में रहते हुए अपनी शक्ति अनुसार समाज की सेवा में लगे रहते हैं। उनका विचार है कि समाज सेवा भी एक नशा हैं, इसीलिए वे अपने निजी लाभ का परवाह किये बिना उसमें लगे रहे। वे कहते हैं - ''आज समाज में लोग किसी एक व्यक्ति को मुखिया नहीं मानते हैं। सभी व्यक्ति अपने आपको मुखिया समझता है। इसीलिए आज समाज में; एकता स्थापित नहीं हो पा रही है। वर्तमान राजनीति से सतनामी एकता को भारी नुकसान हुआ है। पहले की राजनीति से समाज को बहुत लाभ होता था। एकता बनी रहती थी। अब हर व्यक्ति किसी न किसी राजनीतिक पार्टी की विचार धारा को मानता है और अपनी पार्टी की विचारधारा को सतनामी समाज में थोपने की कोशिश करता रहता है, फलस्वरूप समाज में बिखराव, दुश्मनी तथा मनमानी बढ़ने लगी है। छोटे-छोटे लाभ के लिए लोग एक दूसरे को नीचा दिखाने के लिए तुले हुए हैं। ऐसी परिस्थितियों में, सबको समझदारी से चलने की जरूरत है'' । ऐसा श्री भतरिया जी का चिन्तन है। ''सत्यध्वज'' परिवार की ओर हम उनकी दीर्घायु एवं अच्छे स्वास्थ्य की कामना करते हैं।

इस अंक के प्रकाशन हेतु 2500 रू. नकद दान

सत्यध्वज के इस अंक (46) के प्रकाशन खर्च हेतु श्री मोहनलाल भतरिया एवं श्रीमती जमुनादेवी भतरिया भिलाई नगर ने नकद 25 सौ रूपये दान स्वरूप प्रदान किये हैं, जिसके लिये सम्पादक मंडल उनका आभारी है।

सम्पादक

सतनाम आन्दोलन

प्रातः स्मरणीय विश्ववंदनीय सतगुरू बाबा घासीदास जी को सत्-सत् नमन !

आदरणीय सतनामी समाज एवं सतनाम धर्म रक्षक गुरू बालदास साहेब श्री आसकरण गुरू गोसाई, श्री विजय गुरू एवं समस्त गुरूवंशज तथा मेरे सतनामी समाज के महंत, छड़ीदार, राजनीतिज्ञ, चिंतक, लेखक, कवि, साहित्यकार प्रशासनिक अधिकारी, कर्मचारी, किसान, श्रमिक, माता पिता, भाइयों एवं बहनों एवं जितने भी अन्य सतनाम के अनुयायियों बड़े गर्व की बात है कि छत्तीसगढ़ भूमि की इस सोंधी मिट्टी ने कितने महापुरूषों देवताओं को जन्म दिया। धन्य है यह धरा जिसमें गुरूघासीदास बाबा का सतनाम प्रवाहित है। सप्त ऋषियों की स्थली है यह धन्य-धन्य ये छत्तीसगढ़ महतारी को नमन। महानदी, इन्द्रावती, अरपा, पैरी, शिवनाथ, खारून, मांड, जोंक, सोंधूर नदी को नमन। सिहाता, मुचकुंद चिल्फी आदि पर्वत, वन, देवों, जीवों को नमन जिसने यहाँ अवतार लिया जिसने इस धरा को धन्य किया।

सर्व विदित है कि गुरू बाबा घासीदास जी ने अपना सतनाम आन्दोलन 1820 में पूरे जोर-शोर से चलााया। लाखों की संख्या में लोग बाबाजी के मार्ग पर चलने को तैयार हुए। सतनाम धर्म को अपनाया। बाबाजी ने अपने संतो को सतनाम का सप्त सिद्धांत देकर अमृत पान कराया।

बाबाजी अपने आन्दोलन को सुचारू ढ़ंग से संचालन के लिए अपने बेटे तथा समाज को भण्डारपुरी गूरूद्वारा निर्माण का दायित्व सौंपा। गुरूद्वारा बनने के बाद वह धर्मावलंबियों का केन्द्र समस्त जातियों के बन गया इसी के साथ साथ तेलासी पुरी में लोग सतनाम धर्म की दीक्षा लिए, तेलासी में धाम बना चटुवा, खड़वा, कुआ बोड़सरा, अमृतसर (पंजाब) (बंगाल) कलकत्ता, हरियाणा, आसाम, उड़ीसा आदि स्थानों पर लगभग पूरे भारत वर्ष में सतनाम का श्वेत ध्वज फहराने लगा। आज विश्व स्तर पर सतनाम धर्म को जागृत करने का काम हमारे प्रसिद्ध पंथी नर्तक देवदास बंजारे, उषाबारले शांति बाई, लक्ष्मी बाई, आदि अनेकों कलाकारों ने अपने वाणी के माध्यम से किया और सत का अलख जगाया। धन्य-धन्य है ये कलाकार और आगे भी आन्दोलन के रूप में इसे जारी रखें। जिस धर्म में मानव कल्याण, सत अहिंसा, सेवाभाव है तथा भेदभाव का अभाव है विश्व बंधुत्व की भावना है। ऐसे सतनाम धर्म को मानने से सारे जग का कल्याण निहित है। बड़े दुख के साथ कहना पड़ता है। कि आज सतनाम धर्म का गुरूद्वारा स्थल भण्डारपुरी का पुनः निर्माण

कार्य आज 16 वर्षों से अधूरा पड़ा है। हम शासन, प्रशासन का मुँह ताक रहे हैं। एक बाबा जी की स्मृति स्वरूप निर्मित गुरूद्वारा जो टूट चूका है उनके स्मृति-स्थल पर गुरूद्वारा का निर्माण नही कर पा रहे हैं। इसके चलते राजनीतिज्ञ अपना रोटी सेंक रहे हैं। समाज को गुमराह कर रहे है। समाज क्या आज सामाजिक गुरू गोसाई लोग इनके चंगुल में फंस चुके हैं राजनीतिक मोहरा बन गये हैं। पहले गुरू सामाजिक, धार्मिक राजनीतिक पहल करते थे और आज राजनीति में पूंछ परख मात्र स्वार्थवश रह गया है। चुनावी लाभ तक सीमित है। इनसे समाज विचलित हो गया है। यह सत्य बात है कि जिसके मुखिया का हाल बेहाल हो तो उसका परिवार कैसे सुखमय रह सकता है। गुरू परिवार में भी अनेक मुखिया हो गये हैं इनमे समन्वय नही है। जिसके कारण आज समाज में ये लोग सर्वमान्य, प्रथम, पूजनीय नही बन पा रहे हैं। मार्ग भटक गये हैं। समाज का भटकना स्वभाविक है।

मक्खी गुड़ मेगड़ी रहे पंख रहेलिपटाय हाथ मले ओर सिर धुने लालच बुरी बलाय वाली कहावत आज हमारे सतनामी समाज का हो रहा चरितार्थ है। इसके कारण स्वाभिमान संस्कृति चरित्रों का हनन हो रहा है। सतनामी आज गलत रास्ते पर जा रहा है। अभी भी वक्त है समाज को उस गर्त में जाने से रोका जा सकता है। प्रयास सही दिशा में, सच्ची, लगन व मेहनत, बुद्धि और विवेक पूर्वक हो।

आज आवश्यकता इस बात की है कि प्रश्न उठता है कौन नेतृत्वकर्ता हो तो नेतृत्व कर्ता हर स्तर पर हो तभी समाज, धर्म का चंहमुखी विकास होगा लेकिन सबका मालिक एक हो वह सर्वश्रेष्ठ गुरू हो। गुरू वंशावली से हो, जिन्हे समाज सर्वमान्य स्वीकार करे। उनके आदेश शिरोधार्य हो। गुरू पद की गरिमा को ठेस पहुँचाने की दशा में गुरू को अपदस्थ कर सके ताकि तानाशाह न बन सके। गुरू की महत्ता युगों युगों से चली आ रही है। सतनाम धर्म आन्दोलन को आगे बढ़ाने के लिए सर्व प्रथम सर्वोच्च गुरू का चुनाव हो अलग अलग धार्मिक स्थलों का गुरूओं को दायित्व दे लेकिन सर्वगुरू के आदेश अनुसार कार्य करेगें समाज को विश्वास में लेकर महंत, भण्डारी, छड़ीदार का भी पुनः गठन हो, जिनके द्वारा गावों में गुरू आदेश का प्रसारण, कानून (सामान्य) हो। कठोर दण्डात्मक कानून न हो सामाजिक स्तर पर गांव से लेकर केन्द्र अर्थात गुरू स्तर तक विभिन्न समिति का गठन हो (1) गुरू सत्कार समिति (2) शिक्षा संस्कृति समिति (3) अधिकारी समिति (4) कर्मचारी समिति (5) सेवादल समिति (सभी शामिल सभी समिति) (6) आर्थिक समिति (7) कृषक मजदूर समिति (8) महिला विकास समिति

गावों में सामाजिक बैठक 1 माह में एक बार अवश्य हो प्रति सप्ताह मंगल पंथी कीर्तन का आयोजन हो प्रति परिवार गुरूद्वारा में मत्था टेकें। गुरूदान प्रति सप्ताह हो । स्वेच्छानुसार लेकिन प्रति परिवार को देय होगा । आर्थिक समिति में जमा होगा । जिसका हिसाब अगली सप्ताहिक बैठक में देय होगा । गुरू सत्कार समिति के सदस्य द्वारा जैत खाम में प्रतिदिन आरती द्वीप प्रज्जवलित किया जावे । सप्ताह में दो अमृत फल तोड़ कर समाज में उपस्थित लोगों में वितरण किया जावे प्रत्येक परिवार के लोग समय निकाल कर सोमवार शाम 5 बजे गुरूद्वारा में दीप प्रज्जवलित कर मत्था अवश्य टेके । अपने बच्चों को सतनाम धर्म का पाठ अवश्य पढ़ावे । खुद न चल सके तो छोटे बच्चों को जरूर सतमार्ग पर चलने को प्रेरित करे । भक्ति भजन कर घर वापस आवे । अपने गुरूद्वारा के बारे में दूसरों के पास भी चर्चा अवश्य करे इससे सत का प्रभाव समाज, राष्ट्र में बढ़ेगा, देश सुसंस्कृत बनेगा भारत का नाम दुनिया में रोशन होगा क्योंकि यह धरा सत्य अहिंसा की जननी है, महान है ।

जी.आर.मिरी (ग्राम - डुमहा)

- स्वयं को जानो -

"अपने अंतस से परिचित होना ही स्वाध्याय है" – गीता

"अंतस ग्यान बिन सब सूना" – कबीर

"अपन घट के देव ला मनइबो" – गुरूघासीदास

"स्वयं को जानना सर्वोच्च विवेक एवं बौद्धिकता है" – जे. कृष्णमूर्ति

"सत्य तुम्हारे अंदर है उसे स्वयं पहचान" – रजनीश

"आत्मा, परमात्मा की बात छोड़कर अपने को जानो" – महावीर

"अपने नूर की पहचान कर" – मुहम्मद पैगम्बर

"स्वयं को जानने वाला बच्चों के समान निर्मल होता है" – ईसामसीह

द्वारा - जे.एल.चन्द्राकर शिक्षक

सी.59,सेक्टर-2, देवेन्द्र नगर, रायपुर 492009 फोन 0771-2583452

अमृत कुण्ड के महिमा

सतनाम के अमरित ला
गुरू घासीदास हा बनाये हे ।
गिरौदपुरी के धरती मा
अमरित कुण्ड ल सजल बनाये हे ।
कतको दुखिया संत मन
अमृत कुण्ड के महिमा ला पाये हे ॥1॥

उहि अमरित कुण्ड के पानी म
माता सफुरा ला जियाए हे ।
छःमहिना के मुरदा म
अमरित पियाके परान जगाये हे ।

उहि अमरित पानी म
मरे बछिया ला जियाये हे ।
सतनाम के जाप करके बबा हा
छूटे परान ला फिरो के लाये हे ।

तड़प तड़प के मरगे कुकुर
वोला सतनाम के अमरित पियाये हे ।
मुरदा पड़ेतन म जान लौटाये हे ।
तोर पांव ला परके पूंछी ला हलाये हे ।

कारीनाग हा छुए हे दिन म
गिरे हे मनखे गुरू के डगर म
अमरित पानी ला डारे मुंह म
जहर उतार के जीयत मनखे उठाये हे ।

छाता पहाड़ म पांच कुण्ड ल बनाये हे
पांच नाम परमेश्वर बबा हा गिनाये हे
सतनाम के निरगुन संदेश बताये हे
सब संत मन गिरौद म अमरित पाये हे ।

डी.सी.बंजारे
वार्ड नं.1, मेरेगांव, अम्बागढ़ चौकी
फोन नं. 07747-268298

गुरूघासीदास जयन्ती के पावन अवसर पर....

यशगान
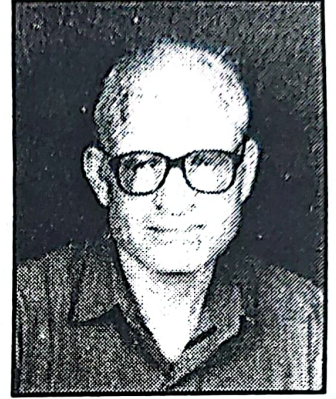
सत्य अंहिसा-मानवता के,
गीत मिलकर गाएँ।
गुरूघासीदास के संदेशों को हम,
जन-जन तक पहुँचाएँ ॥1॥

कुरीतियों का त्याग करके,
जन-जन का संताप हरो।
दया-धर्म-उपकार की भावना से,
अन्तर्मन को उज्जवल करो ॥2॥

सच्ची मेहनत - सद्ज्ञान से
ऐसी राह बनाओ।
दीपक जैसे खुद जलकर,
औरों को राह दिखाओ ॥3॥

सादा जीवन उच्च विचार हो,
वाणी में भी सत्य सार हो।
आडम्बर को छोड़ो प्यारे,
सद्कर्म की चली बयार हो ॥4॥

सज्जनता की निर्मल धारा से,
तन मन की कलुष मिटाएँ।
गुरूघासीदास के संदेशों को हम,
जन जन तक पहुँचाएँ ॥5॥

रामकुमार बंजारे "दीपक"
भदराली (नवागढ़)

सिकलिंग-जनजागरण अभियान

सिकल सेल एनीमिया, एक अनुवांशिक रोग है। यह बिमारी माता पिता से बच्चों में आती है। इस बिमारी में रोगी के लाल रक्त कण ऑक्सीजन की कमी से हंसिये की शक्ल में बदल जाता है इसलिए इस बिमारी को सिकल सेल बिमारी कहते हैं। खून की कमी, जल्दी थक जाना, बार-बार सर्दी बुखार आना, तिल्ली बढ़ जाना, हाथ,पैर के जोड़ों में दर्द, इसके प्रमुख लक्षण है छत्तीसगढ़ की पिछड़ी एवं अनुसूचित एवं जनजाति में यह रोग अधिक पाया जाता है। अनुमानतः 2.5 लाख लोग इससे पीड़ित हैं। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में इसका अभी तक इलाज नही है। इस बिमारी को जड़मुल से इलाज करने वाले नीम-हकीम डाक्टर से बचें। इस रोग के रोगी को फोलिक एसिड की गोली, बुखार आने पर पेरासिटामाल, शरीर में दर्द होने पर डॉक्टर की सलाह से दर्द निवारक गोली लेनी चाहिए। खून की कमी होने पर अधिकृत खून बैंक से खून लेना चाहिए।सिकल सेल रोगी को अधिक पानी पीना चाहिए, सुपाच्य भोजन, फल एवं हरी सब्जी अधिक खाना चाहिए। यह रोग अनुवांशिक है अतः दो सिकल सेल वाहक या सिकल सेल रोगी को आपस में विवाह नहीं करना चाहिए। जिन जातियों में यह रोग व्याप्त है वहां के युवक-युवती के शादी के पूर्व सिकलिंग रिपोर्ट अवश्य देखना चाहिए। इस रोग में जन-जागरण से कमी लाया जा सकता है । छत्तीसगढ़ सरकार के स्वास्थ्य विभाग के जिला अस्पताल, मेडिकल कालेज रायपुर एवं भारतीय रेडक्रास सोसायटी की राज्य, शाखा बाम्बे मार्केट राज टॉकीज के सामने, रायपुर में निःशुल्क सिकलिंग की जांच की जाती है। माटी सामाजिक संस्था भी सिकल सेल जन जागरण अभियान चला रही है। जिस समाज में यह रोग फैला है वहां के सामाजिक संस्था को सिकल सेल रोग की जानकारी देना उनकी सामाजिक जिम्मेदारी है।

स्व. कु. रश्मि चन्द्राकर (एम.बी.बी.एस.-II वर्ष की छात्रा)
जन्म तिथि - 06.07.1983
निधन - 10-08-2004 (सिकलिंग रोग से)

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें।

जे. एल. चन्द्राकर

सी-59, सेक्टर-2, देवेन्द्र नगर, रायपुर-492009,
फोन : 0771-2583452
(रविवार, सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक)

स्व. रश्मि चन्द्राकर की स्मृति में जनहित में प्रसारित

पी.एम.टी में सफल छात्र धर्मेन्द्र कुमार मारकण्डे
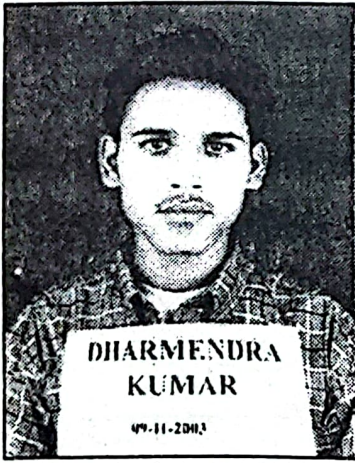
जन्मतिथि	-	27-11-84
पिता का नाम	-	श्री संतलाल मारकण्डे
माता का नाम	-	श्रीमतीकान्ति मारकण्डे
जन्म स्थान	-	ग्राम उमरपोटी, जिला-दुर्ग
विद्यालय का नाम	-	भिलाई विद्यालय से.-2, भिलाई नगर

प्रश्न 1 :- पी.एम.टी. में सफल होने के लिये किस तरह का परिश्रम किया था।

उत्तर :- केवल मैंने तैयारी के चार महीनों तक ही विश्वास के साथ बहुत ही लगन से तैयारी की थी जिसका परिणाम मुझे शासकीय दंत चिकित्सा महाविद्यालय में प्रवेश के रूप में मिला। इन चार महीनों के बाद मेरी तैयारी में कोई बात नहीं थी, परन्तु मैंने सफल होने के सभी सूत्रों के समझा और उन पर अमल करने का प्रयास किया। इन सूत्रों को समझने में मुझे दो साल लग गये। मैंने तैयारी में अनुशासन को समय बचत के साधन के रूप में उपयोग किया। समय नियोजन के साथ मैंने तैयारी की परन्तु निरंतरता की कमी के कारण मैं इस परीक्षा में थोड़ा पिछड़ सा गया अतः सफलता के लिये एकाग्रता और निरंतरता पूरक चीजें है।

प्रश्न 2 :- चिकित्सा के किस विभाग को चुना गया है।

उत्तर :- दंत चिकित्सा विभाग।

प्रश्न 3 :- परिवार का वातावरण कैसा और कितना उपयोगी रहा।

उत्तर :- हमारा परिवार एक गरीब परिवार है जो एक बी.एस.पी. नौकरी के सहारे ही टीकी है। पी.एम.टी. की तैयारी में मुझे परिवार के तरफ से व्यावहारिक सहायता भरपूर मिली। वैसे घर में पढ़ाई का माहौल मेरे पढ़ने से ही बना। आर्थिक तंगी के कारण मैंने प्रथम वर्ष की तैयारी स्वयं ही की, जिसमें मैंने पी.एम.टी. के लिये जरूरी पुस्तकें भी न खरीद सका। परन्तु हमारे अध्यापकगणों ने इसमें हमारी मदद की।

प्रश्न 4 :- डॉक्टर बनने की इच्छा कब और कैसे हुई ?

उत्तर :- जब मैं पाँचवीं कक्षा में था तब बाजार से मामा की सायकिल में बैठ कर आते-

आते उनके जुबानी डॉक्टर की कहानी सुनी ।

प्रश्न 5 :- अपने जीवन के खट्टे-मिठे अनुभव यदि कोई हो तो ।

उत्तर :-खट्टे अनुभव - दो वर्ष का लम्बा समय मैने सफलता के सूत्र समझने में लगा दिये। मीठे अनुभव - अपने जीवन का एक लक्ष्य बनाकर अपने अस्तित्व को महसूस किया (12 वीं के बाद)

प्रश्न 6 :- किस साहित्यकार की किताबें अच्छी लगती हैं और कितनी किताबें पढ़ी हैं ?

उत्तर :- शिवखेड़ा की एक किताब तथा स्वेट मार्डन की प्रेरणा दायक पुस्तकें पढ़ीं है ।

प्रश्न 7 :- किस भगवान की पूजा करते हैं और क्यों ?

उत्तर :- मैं भगवान, गॉड, खुदा, वाहे गुरू तथा सरस्वती मैया की पूजा करता हूँ। मुझे इस परमब्रह्म विश्वास पर विश्वास है और विश्वास का कारण अपने दैनिक कर्मों को एकाग्रता से करना है ।

प्रश्न 8 :- समाज और अगली - पीढ़ी को क्या संदेश देना चाहते हैं ?

उत्तर :- हमारे समाज को परंपराओं तथा रूढ़ीवादी विचार धारा से हटकर समकालीन परिस्थितिओं के अनुसार ढलना चाहिए। नई पीढ़ी में जोश और उत्साह चाहता हूँ जो इस दुनियां को बसा कर रखें। केवल और केवल कड़ा परिश्रम ही किसी भी छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी सफलता का कारण होता है ।

श्री धर्मेन्द्र कुमार मारकन्डे के माता पिता
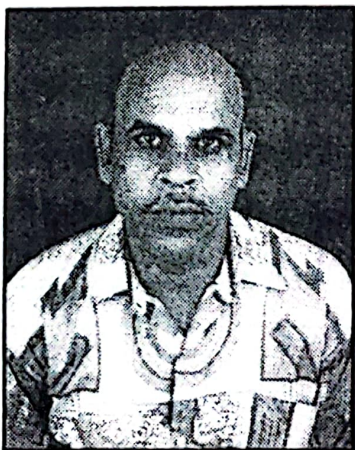
श्री संतलाल मारकण्डे

श्रीमतीकान्ति मारकण्डे

द्वारा सम्पादक सत्यध्वज

आज दीप तुम्हें जलना होगा

आज दीप तुम्हें जलना होगा,
साथ-साथ अब चलना होगा।
घर में दीप जला न पाया,आंगन मेरा सूना है।
बिछुड़ रही है तेरी किरणें, उत्साह मेरा अब दूना है।
मैं हूँ एक अनजान पथिक, हर राह को रोशन करना होगा।
आज दीप तुम्हे ....

2. सबके घर में दीप जलेगा, मेरा घर अब सूना क्यो,
कोई अजनबी पहचान न पाया, कठिन समय ही चुना क्यों,
मन में चाह लिए फिरता हूँ मेरी चाहत पूरी करना होगा।
आज दीप तुम्हे.......

3. बैठी गृहणी आस लगाये, दीपक साथ जलायेंगे,
नन्हे, नन्हे, हाथ कह रहे, लड़ियाँ साथ चलायेंगे।
अरमानों को टूटने ना दो, सपनों को बिखरने ना दो
टूटे न अरमान कभी भी, स्वप्न बिखरने न पाये
कोमल भावो के सपनों को हर हालत में फलना होगा।
आज दीप तुम्हे ......

4. फसलें पकी खड़ी खेतों में मन मयूर सा सजता है,
मड़ई मातर का गांव है मेरा, गड़ंवा बाजा बजता है।
क्षुधा ज्वाल से जलते है जो, उनको शीतल करना होगा।
आज दीप तुम्हे.....

5. फुटपाथों पर सोते बच्चे क्यों ढूढ़े अब फूटी फटाका
सब फोड़े राकेट और एटम, उनके हिस्से क्यों बूझी फटाखा
तेरी लौ मे है ताकत इतनी, अब जले बारूद को भी फूटना होगा।
आज दीप तुम्हें ....

मोहन डहरिया
भारतीय स्टेट बैंक, कचहरी शाखा, रायपुर
फोन: 5040705, 5057543 (नि.)

भारतीय नवजागरण के जनक गुरूघासीदास

भारतीय समाज में वर्ग, जाति, धर्म के नाम पर किये अन्याय दमन शोषण को युग पुरूषों ने ललकारा है, ध्वस्त किया है, सामाजिक असमानता, रूढ़िवादिता और अंधविश्वास को मिटाने के लिये युग पुरूषों ने संघर्ष किया है। संघर्ष की यह डोर न कभी टूटी और न ही धरती पर गिरी, इस सूत्र को मजबूती से पकड़ने के लिये एक के बाद एक युग निर्माताओं ने भारत की पावनधरा पर जन्म लिये।

गुरूघासीदास जी ऐसे युग में पैदा हुए जहां सांस्कृतिक, नैतिक, आध्यात्मिक अंधकार छाया हुआ था, मानवता सिसक रही थी, समाज वर्ग जाति के नाम पर विभाजित था सामाजिक संरचना पूरी तरह चरमरा गई थी, वहीं धार्मिक आध्यात्मिक शांति का केन्द्र मंदिर, रंग शाला बने थे, मूक निरीह प्राणियों की बली दी जा रही थी, नारियों की अस्मिता लूटी जा रही थी।

गुरूदेव का समकालीन भारत छिन्न-भिन्न था वहाँ छत्तीसगढ़ भी मराठों के हाथों आ चुका था, जहां धान का कटोरा दिन दहाड़े लूटा जा रहा था, न्याय का नामों निशान नहीं था, जातीय आधार पर न्याय होता था, प्रशासक वर्ग भोग विलास में मस्त थे, भारतीय समाज घोर अंधकार में डुबा हुआ था, प्रकाश के पुंज के रूप में गुरू घासीदास जी ने 18 दिसंबर 1756 को छत्तीसगढ़ के गिरौदपुरी गांव में जन्म लिये।

गुरूघासीदास जी के उपदेश, अनुभव व सत्य पर आधारित है, उन्होंने सत्य को व्यवहारिक बनाने के लिये मानव जाति के प्रति प्रेम भाईचारा, समानता के व्यवहार को उचित बताया साथ ही उन्होंने समाज में व्याप्त जातिवाद अशपृष्यटा, चरित्रहीनता, मदिरापान, मांस, आहार, बाल विवाह, बहु विवाह, स्त्री पर अत्याचार के विरूद्ध शंखनाद किये।

माननीय मूल्य जो धूमिल हो गये थे, युगों-युगों से प्रताड़ित अपमानित सुषुप्त समाज को जागृत कर, आतम विश्वास पैदा कर नवजीवन प्रदान कर सम्मान जनक स्थान दिलाया, गुरूदेव पूर्ण सामाजिकता, समानता एकेश्वरवाद के प्रबल समर्थक थे। सामाजिक धार्मिक दर्शन सत्य पर आधारित है, गुरूदेव जी के अनुसार सत्य की अनुभूति के बिना धार्मिक श्रद्धा बेमानी है, सत्य ही मानव का आभूषण है, सत्य ही जीवन का आधार स्तंभ है, सत्य कर्म, सत्य वचन, सत मार्ग से ही मानव का कल्याण हो सकता है। गुरूजी ने सतनाम का महामंत्र दिया और कहा, सतनाम पर विश्वास करो, सत मार्ग पर चलो तथा सत को व्यावहारिक बनाओं।

सतनाम की महिमा बड़ी, सकल नाम के सार।
जपत नित जन सदा, कोई न पावे पार॥

सत्य से ही सृष्टि की रचना हुई है सत्य पर सूर्य चन्द्रमा तारे टिके हैं सत धर्म ही मानव जीवन के रीढ़ की हड्डी है। गुरूदेवजी के सामाजिक दर्शन का दूसरा पहलू है मानवतावाद मनुष्य न छोटा है न बड़ा सभी परम पिता के अंश है मनुष्य के शरीर में ईश्वर का वास है यदि ईश्वर के प्रति सच्ची श्रद्धा है तो बिना भेदभाव के मनुष्य को समाज में समान अधिकार, सम्मानजनक स्थान देने के लिये कहे, गुरूदेव जी समाज में विशेषाधिकार के भाव से दुखी थे, वे अच्छी तरह से जानते थे कि यदि समाज में विशेषाधिकार को समाप्त कर दिया जाए तो जाति-पाति का अत्याचार अपने आप ही समाप्त हो जायेगा, इसलिये उन्होंने सामाजिक, धार्मिक समानता के लिये सतनाम आंदोलन चलाया। समानता मानवता को धर्म का प्राण बताया, सत्यनाम को जन-जन तक पहुंचाया। गुरूदेव के संदेश का तीसरा पक्ष है एकेश्वरवाद, वे मूर्ति पूजा कर्मकाण्ड के विरोधी थे, गुरूजी के अनुसार ईश्वर का वास सभी प्राणियों में है। अपने शरीर रूपी मंदिर में विराजमान "साहेब" को छोड़कर ईश्वर तलाशने में दर-दर भटकते है। मंदिर मस्जिद में लड़ाई होती है, मनुष्य मंदिरों की पवित्रता को बनाये रखने के लिये सत वचन सतकर्म कर दीप, धूप जलाते हैं, परंतु जिस मंदिर में ईश्वर विराजमान है वहीं की पवित्रता को बनाये नहीं रखते, शराब, मांस आहार करते हैं, मनुष्य मनुष्य के प्रति घृणा करते हैं जो ईश्वर के प्रति अपराध है, गुरूदेव जी ने समझाये ईश्वर निराकार है, एक है शरीर रूपी मंदिर में विराजमान है, हृदय में प्रज्ञा, करूणा, प्रेम के दीप, धूप जलाओं सत्य को व्यवहारिक जीवन में उतारों।

गुरूजी ने "सत" को ही मानव जीवन का आभूषण बताया है मनुष्य की एक ही जाति है मानव और एक ही धर्म है सत्य, गुरू घासीदास जी के प्रभाव से ही समाज में धार्मिक आध्यात्मिक चेतना का संचार हुआ। अहिंसा गुरूजी के सप्त सिद्धांतों में चौथा है सभी जीव में ईश्वर का वास है अतः जीव हत्या करना घोर पाप बताया है। मंदिर में बलिप्रथा को बंद करवाने के लिये सत्याग्रह पूर्वक प्रचार-प्रसार किये। समाज में स्त्रियों पर बहुत अत्याचार, अमानवीय व्यवहार किये जा रहे थे विधवा महिला को समाज में सम्मान नहीं दिया जाता था, गुरू घासीदास जी महिलाओं के समान अधिकार के पक्ष धर थे, बाल विवाह, महिला पर अत्याचार के विरूद्ध अभियान चलाया, विधवा महिला के पुनः विवाह के समर्थक थे। गुरूघासीदास जी भारतीय दर्शन के धरोहरों में से एक है जिन्होंने भारतीय की शोषित जाति

में जन्म लेकर, भारतीय धर्म को लुप्त होने से बचा लिया, दिशा विहीन समाज को सत मार्ग दिखाया भारतीय नवजागरण का यह स्वर्ण युग था जो गुरू घासीदास जी से ही प्रारंभ हुआ और छत्तीसगढ़ से ही गुरूदेव के पश्चात राजाराम मोहनराय ।। 1772-1833 ।। ज्योति बा फुले 1827 विवेकानंद स्वामी जी ने 1863-1902 में भारतीय समाज को नवजीवन प्रदान किया। आज नैतिक मूल्यहीनता के कारण धर्म के नाम पर विवाद के कारण समाज विघटन के कगार पर खड़ा हुआ है। आज पुनः नैतिक क्रांति की आवश्यकता है।

''हंसा नई दिखय, तोर अब ठिकाना हो।
जा जा गुरू गुरूं के चरण मां, नई ते पाछु हो ही पछताना हो''।

शिवप्रसाद जोशी
उप संपादक, ग्राम-पोष्ट-मोहारा डोंगरगढ़ जिला-राजनांदगांव

पंथी गीत

हमर दुख के हरइया गुरू,
कहां गये मोला छोड़ी के ॥

गरीब के गूरू गला लगइया।
खाई अऊ डबरा के, ते पटइया ॥

तोला में खोजत हंव बैठ के बैलगाड़ी
कहां.......................छोड़ी के

जंजीर काट के धीरज धरइया
मरे जैइसे मानुष के जिंदा जगइया

कोन जगह म ते लुकाये खोजेव नदिया खाड़ी
कहां................................छोड़ी के

घर घर म तें जोत के जलइया
अंधियारी के उजाला करइया

तोर पूजा करथे कोसरे दोनो हाथ जोड़ी के
कहां............................छोड़ी के

सेवक राम कोसरे
सेक्टर-7, भिलाई नगर (छ.ग.)

पुस्तक समीक्षा

तीक्ष्ण अनुभूतियां जलाती हैं; माचिस की तीलियाँ

काव्य संकलन - "अब न चुभन देते हैं, कांटे बबूल के "

कवि - दादूलाल जोशी 'फरहद'

प्रकाशक - प्रयास प्रकाशन सी-62, अज्ञेय नगर, बिलासपुर

मुद्रक - आशा ऑफसेट प्रिंटर्स, सुपेला, मूल्य - एक सौ रूपये

प्रस्तुत काव्य संग्रह 'अब न चुभन देते हैं कांटे बबूल के' कवि दादूलाल जोशी 'फरहद' की प्रथम काव्य कृति है। इसमें गीत, गजल, मुक्तक और नई कविताओं का संकलन है। 'फरहद' छत्तीसगढ़ के चर्चित रचनाकार हैं, अनेक पत्रिकाओं का संपादन कर चुके है। वर्तमान में 'सत्यध्वज' पत्रिका के संपादक है, विगत 15 वर्षों से वे इसका संपादन कर रहे हैं , आप एक कुशल वक़्ता भी है।

काव्य-संग्रह के आमुख में डॉ. विनय कुमार पाठक ने लिखा है- "ये कविताएं, गीत, गजल और नई कविताओं के संकलन मात्र नहीं है। कवि के विकासात्मक यात्रा के साक्षी हैं। गीत एवं गजल में संवेदनाओं का सार है। जबकि नई कविताओं में विचारों का अंबार है। आज जो दलित और स्त्री-विमर्श का बोलबाला है, वह प्रचार के रूप में नहीं भावों एवं विचारों के स्वीकार के रूप में ग्रंथित है।"

कवि की इस कृति में जीवन के ठोस यथार्थ से उत्पन्न तीव्र एवं तीक्ष्ण अनुभूतियों का सार है। वह सभी प्रकार की विषमता, अनीति, अन्याय, बनावटीपन एवं पाखंड के विरूद्ध आवाज उठाता है। उसके भीतर वैचारिक आग दहक रही है। वह नवीन-युग-चेतना का संचार करना चाहता है। व्यवस्था के खिलाफ वह तेजी से परिवर्तन चाहता है।

कवि के गीतों में लय है। भावों का प्रवाह है। आवश्यकता के अनुरूप शब्दों का चयन किया गया है। सुलगती हुई माचिस की तीली की तरह उसकी संवेदनाएं उसकी मूल वेदना को अभिव्यक्त करने में समर्थ है। वह बर्फ की सिल्लियों को पिघलाकर भाप की ऊर्जा में बदल देना चाहता है। वह कवियों को भी लताड़ लगाता है और उसके अंतस को झिंझोड़कर उसे लकीर का फकीर बनने के विरूद्ध चेतावनी भरे लहजे में कहता है - परिवर्तन और नव निर्माण से घबराते हो /पुरानी कोठरी के नये गुलाम/कवि दोस्त ! तुम धन्य हो या नगण्य हो !

काव्य संग्रह में जहाँ विचारों की तीक्ष्ण तपन है वहीं कोमल भावनाओं को भी जगह दी गई है, दलित, पीड़ित स्त्रियों के साथ शोषणकर्ताओं के अत्याचारों के विरूद्ध वह उग्र है। वह लिखता है 'मरियल शहर के /गले में झूम रही है/परित्यक्ता बस्ती/जबरदस्ती ? इसके आगे ....और आगे की पंक्तियाँ देखें - 'प्रतिदिन की तरह /तापित तन के बदले /दो मुट्ठी रश्मियाँ/फेंककर दे देता है/अहमी सूरज/जिसे कमर में झट खोंस कर/चुपके से घुस जाती है घर में/जीवित रहने को/इसीलिए, निश्चिन्त निश्छल होने का/कल के अभिनय को/दुहरा रही है - तात्कालिक/सूरज ने भी आँखें मटकाई/संकेतों का आदान-प्रदान हुआ /जिसे उसका बेटा-नन्हा मकान/आश्चर्य किन्तु खामोशी से/एक टक देख रहा था ? आग पर थूकने का प्रतीक व्यवहारिक नहीं है, फिर भी कवि ने अपने आक्रोश को व्यक्त करने के लिए यह प्रयोग किया है, वह ईश्वर के अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह लगाता है - 'ये भगवान/हमें मंत्र रटाते हैं/मोक्ष दिलाते हैं/हमें आदमी बनाते हैं/कभी-कभी तो देश और विश्व को चलाते हैं/किन्तु ये सब/तुम्हारे प्रकोपों से/मुक्ति क्यों नहीं दिलाते ? कवि का संकेत मौसमी आपदाओं की ओर है।

'तुम आग हो' कविता शीर्षक में कवि लिखता है - ''मैं तुम्हें दहकाना चाहता हूँ /ताकि तुम जला सको / उन तमाम किताबों को /जिसमें आदमियत की विकृत परिभाषा हो/और जो/आदमी को नस्लों में/विभक्त करने की वकालत करती हो /मुक्त छंद की रचनाओं में शब्द योजना, प्रतीक, भावों की अभिव्यक्ति, कविता की बेहतर बुनावट के साथ लिखी गई हैं। कुल ग्यारह मुक्तकों के माध्मय से कवि ने विरोधाभाषों एवं व्यवहारों में मिन्नता को चिन्हांकित करने का प्रयास किया है। - 'अपने प्रत्येक पड़ावों पर, भूतहे कुछ मकान मिले/प्यार लुटाने वालों के घर, खूबसूरत अपमान मिले/प्रेम-पीयूष से सींचा था जिसने इस दिल की बगिया/उसे उजाड़ा बेदर्दी से, ऐसे कुछ नादान मिले। गजलों में उसने पाखंड और विरोधाभाषों पर प्रहार किया है। देखें - 'मेहनत हमारी, हैं खेत हमारे/और उनके गोदामों में गल्ला है/नाम उछला, तो खूब उछला उनका/जो नाम वालों का दुमछल्ला है/ खेलने वालों का खेल तो देखिए /हम ही गेंद और हम ही बल्ला हैं ?

काव्य संग्रह में प्रारंभ से ही गीतों की अविराम निर्झरिणी बहती है। गीत सुगलते सवाल लिए हैं। विश्रांति है तो बसंत की छांव में जहाँ नवीन कल्पनाएं हैं। सुंदर प्रतीक हैं। कोमल भावनाएं है। जैसे विचारों का ज्वार थम सा गया हो और नदी तट के सुंदर घाट बन गए है। बसंत का श्रृंगार कवि को भाता है। लुभाता है। तभी वह कह उठता है - परिहास नहीं सब कुछ लगता सांच गौरेया/हर सुबह मेरी खिड़की पर नाच गौरेया/मीठे-मीठे रस भीने

शब्द उवाच गौरेया/दीये की संघर्षशीलता कवि के लिए प्रेरक है - 'अंधियारे में जन्म लिया और/अंधियारे में पला बढ़ा है /लिये प्रेरणा-पुञ्ज यहाँ पर/एक नन्हा दीप जला है/लघु जीवन हैं, वृहत पथ है/और ये बौने पैर चला है ? एक अन्य गीत में उसका सवाल है - 'कौन है जो बार-बार/चुपके से आता है /एक हाथ में धर्मग्रंथ/दूसरे में बारूद थमाता है ? ' उसूलों के खात्मे के बारे में वह लिखता है - चौराहों में कत्ल हुए सारे उसूल के/अब न चुभन देते हैं, कांटे बबूल के ?

काव्य-संग्रह में अलंकारों का यथा स्थान प्रयोग किया गया है। कविताएं परिपक्व विचारों का संवहन करती हैं। नई कविताएं पाठकों को वैचारिक शीर्षासन करने के लिए प्रेरित करती है। कविताएं आम-पाठकों तक सहजता के साथ कैसे पहुँचे रचनाकारों को इसे भी ध्यान में रखना आवश्यक है कवि की लोकप्रियता की यह भी एक कसौटी हो सकती है। कवि दादूलाल जोशी 'फरहद' भविष्य की वृहद संभावनाओं को समेटे हुए हैं।

शत्रुघन सिंह राजपूत

कैलाश नगर, राजनांदगांव

(पृष्ठ 32 - अनुकरण का शेषभाग)

व्यवस्था ऐसी है, हम सभी परिचित हैं। यदि आप स्वाभिमानी बने रहे तो आपको अनावश्यक क्रोध आयेगा और आप सीख या ज्ञान नहीं पायेंगे। दीमक, चीटीं और बंदरों की एकता से हम वाकिफ हैं। सेना में युद्ध करने हेतु दुश्मन को घेरने एवं आत्म रक्षा की कला बगुला नामक पक्षी से सीखा गया है। अनेक विमान भी पक्षियों की आकृति के ही हैं। विज्ञान की ऊचाईयों के पीछे विभिन्न जीव जन्तु, प्रकृति तथा धर्म ग्रंथ आदि से प्रेरणा मिली है और मिल रही हैं। हमें इनका अनुकरण करने में संकोच क्यों ? एक बार एक बड़े अधिकारी ने समझाते हुए मुझे कहा - ''जो तुम्हे नहीं मालूम उसे किसी से भी हो, पूछने में संकोच मत करों भले ही नन्हा सा बच्चा हो। दूसरी बात - अपनी गलती स्वीकार करने में संकोच मत करो। गलती होने पर Sorry अवश्य बोले भले ही सामने वाला छोटा हो। स्वाभिमान बीच में नहीं आना चाहिये। ऐसा करके तो देखो, ऊँचाईयों में पहुंच जाओगे नहीं तो आपका सम्मान अवश्य बढ़ जायेगा।'' मैं आज भी इस उपदेश के लिए उन्हें हृदय से धन्यवाद देता हूँ और आशा एवं निवेदन करता हूँ आप सभी पाठकों से कि आप भी इसका अनुकरण करके देखें। जय सत्यनाम।

सत्यध्वज के वार्षिक सदस्यों की सूची

गतांक से आगे

77	" मनहरण रात्रे	सिवनी कला डोंगरगढ़	- 100.00
78	" एस.आर.टण्डन	पटवारी मोहारा डोंगरगढ़	- 100.00
79	" एल.के.बंजारे	अधीक्षक बालक छात्रावास डोंगरगढ़	- 100.00
80	" एम.आर.चंदने	अधीक्षक पो.मै.छात्रावास डोंगरगढ़	- 100.00
81	" श्रीमती गीतादेवी जोशी	मोहारा डोंगरगढ़	- 100.00
82	" श्री आर.डी. धृतलहरे	अधी. छात्रावास घुमका	- 100.00
83	" एम.एल तोडे	शिक्षक बा. आश्रम गातापार	- 100.00
84	" सुरेश कुमार मारकंडे	शिक्षक आलीवारा (हरदीटेका)	- 100.00
85	" एम.आर.बंजारे	उ.व.शि.उमा.वि. मुसरा डोंगरगढ़	- 100.00
86	" मालिकदास बंजारे	सायकल स्टोर्स, मुसरा डोंगरगढ़	- 100.00
87	" लोकनाथ भारती	तेन्दूभाठा मोहारा, डोंगरगढ़	- 100.00
88	" नीलकंठ खुटेल	मोहारा डोंगरगढ़	- 100.00
89	" ए.के. बंजारे	अधीक्षक छात्रावास ठेलकाडीह	- 100.00
90.	"एस.आर.कन्नौजे जी	स.प्राध्यापक शा.महा.अं.चौकी	- 100.00
91.	"के.एल.मतावले जी	(व्याख्याता) शा.उ.मा.शा.मानपुर	- 100.00
92.	"एम.एल.देशलहरा	(सी.ई.ओ.) जनपद पंचायत मानपुर	- 100.00
93.	"डी.सी.रात्रे	(पटवारी) कार्यालय तहसीलदार अं.चौकी	- 100.00
94.	"शिवकुमार कुर्रे	(शिक्षक) आमाटोला पो.बांधाबाजार अं.चौकी	- 100.00
95.	"आर.सी.महिलांगें	(शिक्षक) आमापारा वार्ड नं.04 अं.चौकी	- 100.00
96.	"जे.आर. परतेती	(स.प्राध्यापक) शा.महाविद्यालय अं.चौकी	- 100.00
97.	"नरेन्द्र गहिने	(आरक्षक) थाना-गैंदाटोला, छुरिया, राजनांदगांव	- 100.00
98.	श्रीमती निर्मला साहू (जोशी)	(व्याख्याता) शा.कन्या उ.मा.विद्या.अं.चौकी	- 100.00
99.	श्री देवलाल कुर्रे	(अध्यक्ष सतनामी समाज) सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र परिसर अं.चौकी	- 100.00
100.	"रामलाल भारती	ग्राम-केकसीटोला पो.अं.चौकी राजनांदगांव	- 100.00
101.	"बी.आर. सिरमौर	(प्राचार्य) शा.उ.मा.शा.औंधी वि.खं. मानपुर	- 100.00
102.	डॉ. राजेन्द्र भगत साहब	(ब्लॉक पशु चिकित्सा अधिकारी) वि.खं.अं.चौकी जि.राजनांदगांव	- 100.00
103.	"मोहन सवाई	कृषि वि.अधिकारी बिहरीकला पो.अं.चौकी	- 100.00

104. श्री बिहरी राम तामश्कर पटवारी आतरगांव चौकी
105. श्री एन.एल. माहिले व्याख्याता शा.उ.मा.शा. मोहला
106. श्री आर.डी.गहिरे मानचित्रकार जलसंसाधन मोहला
107. श्री बी.आर. सोनवानी 3 व शि.शा.उ.मा.शा.अं.चौकी
108. श्री एच.डी.बघेल कोहका मानपुर
109. सर्व श्री डॉ. एम. आर. गहिने भाटापारा राजनांदगांव
110. लालचंद गहिने भाटापारा राजनांदगांव
111. के.आर. गहिने भाटापारा राजनांदगांव
112. कुलेश्वर दास गहिने भाटापारा राजनांदगांव
113. लाल श्यामशाह शिरमौर भाटापारा राजनांदगांव
114. ए.आर.लहरे भाटापारा राजनांदगांव
115. गैंदलाल जागड़े कांकेतरा
116. मदन लाल भंडारी मौहाभाठा
117. अशोक कुमार खरे ठाकुर टोला
118. धरमदास कोसरे ठाकुरटोला
119. गणेशराम मिरी (शिक्षक) सत्यध्वज प्रतिनिधि
मु.पो.-भानसोज व्हाया -आरंग जिला - रायपुर (छ.ग.)
120. श्री कामता प्रसाद बंजारे
मु. डिधारी पो. भानसोज व्हाया - आरंग जिला - रायपुर (छ.ग.)
121. श्री हरखराम जांगड़े (स.शि.) मु.पो. - भानसोज व्हाया-आरंग जि.रायपुर
122. श्री चैतराम गाहिरवार मु.पो.-भानसोज, व्हाया - आरंग जि.-रायपुर
123. श्री पी.आर.कोसरे (ग्राम सेवक) मु.बिटकुली पो.-लवन व्हाया -बलौदा बाजार जिला- रायपुर
124. श्री जीतेन्द्र कुमार माण्डले मु.पो.-भानसोज व्हाया-आरंग जिला - रायपुर (छ.ग.)
125. श्री नंदकुमार बांधे (स.शि.) मु-डिधारी पो. भानसोज व्हाया-आरंग जिला - रायपुर
126. श्री अशोक कुमार सोनवानी श्रद्धानंद विद्यामंदिर संतोषी नगर - रायपुर (छ.ग.)
127. श्री सुरेश कुमार पुरेना आदर्श कालोनी - मोवा - रायपुर (छ.ग.)
128. श्री बी. डी. सोनवानी (अधिक्षक)इंदिरा कालोनी- मंदिर हसौद जिला-रायपुर

स्व. मिनी माता की पुण्य स्मृति में।

''हम सतकर्म वीर,''
हम सतकर्म वीर हैं,
सतयुग से संकट झेल रहे हैं हम,
संकट को दूर भगाने एक जुट हो,
अमानवीय कृत्य के विरूद्ध,
संघर्ष कर, आवाज उठाये हम ॥
सोंचे न कभी मन में,
दीनहीन पीड़ित हैं हम,
कर्म व आचरण से करें प्रदर्शन,
सतकर्म वीर है हम ॥
सत श्रमशक्ति का आराधक,
दुर्गुण विनाशक,
सदगुणोपासक,
संत गुरूघासीदास के अनुयायी,
गुरू माता मिनी के बेटे हैं हम ॥
मानवता के लिए,
मानव - मानव है,
छोटे बड़ों का भेद,
कभी नहीं करते हम,
गुरूघासीदास के
सतनाम धर्म के उपासक प्रचारक,
अन्याय के लिए सर्वदा संघर्षशील,
सतनामी हैं सतनामी हम ॥
मानव द्वारा अमानवीय कृत्यों के
विरूद्ध न्याय संगत आवाज उठाते हम
माता मिनी के, पीड़ित जन हित,
सपनों को संघर्ष कर,
निर्भीक बन संगठित हो,
मां के चरणों में,
हर वर्ष 11 अगस्त को,
संघर्ष शीलता
एक जुटता का
श्रद्धा की मालाएं
अर्पण करे हम
सतकर्म वीर हैं हम ॥

अमानवीय कत्यों के विरोध में,
लड़े हैं सर्वदा लड़ते रहे,
यही मा मिनी के प्रति,
श्रद्धा पूर्ण पुनित सुगंधित,
पुष्पांजलि पुष्पांजलि,
आये हर पल एक दिन जन मन में,
सुख, हरा, भरा जीवन हरियाली ॥

बंशीलाल जोशी
रचनाकार
सिघोला

अनुकरण

पवन कुर्रे
6 -D/सड़क-2/सेक्टर-7, भिलाई

मनुष्य का अधिकांश जीवन अनुकरण करते करते बीत जाता है। बच्चा जब जन्म लेता है तो सबसे पहले अपनी माता के फिर परिवार, पास पड़ोस, विद्यालय, महाविद्यालय, कार्यालय, राजनीति इत्यादि सभी जगह दूसरों के बताये रास्ते में चलना सिखाया जाता है। संत महात्मा, नेता, अभिनेता यहां तक कि कुछ बातें बच्चों से सीखते हैं। कहा गया है, हर वस्तु के दो पहलू होते हैं। अस्तु अच्छाई के साथ बुराई भी जुड़ी रहती है। यह अनुकरण करने वाले के ऊपर होता है कि वह किसका अनुकरण करें, अच्छाई का या बुराई का। अच्छाई का अनुकरण करके जीवन को सुखमय बनाया जा सकता है। किन्तु बुराई से नहीं कुछ अनुकरणीय बातों का जिक्र आवश्यक है :-

(1) फूलों से नित हंसना सीखो, भौंरों से नित गाना। फल से लदी डालियों से, नित सीखो शीश झुकाना ॥
(2) आलसस्य कुतो विद्या, अविद्यस्य कुतो धनं। अधनस्य कुतो मित्रं, अमित्रस्य कुतः सुखम् ॥
(3) Charector is like glass even a little crack show
(4) Time teacher those who have no teachers.
(5) Man is the architact of his own fate.
(6) There is no shart cut to success and no substitite for hard work.
(7) Dig the well before you are thirsty.

जीवन के हर क्षेत्र में अनुकरण करना होता है। विद्यार्थी जीवन में सदा अच्छे विद्यार्थी का, खेल में अच्छे खिलाड़ी का। हम भौतिक साधनों का अनुकरण तत्काल कर लेते हैं। इसलिए व्यक्ति रहन-सहन में पड़ोसियों का प्रभाव अत्यधिक देखने को मिलता है। यदि पड़ोसी पनप रहा हो तो उससे जलो मत क्योंकि जलने से स्वयं का तथा अपने ही परिवार को नुकसान होता है। ईर्ष्या के बजाय उसके आगे बढ़ने की कला का पता लगायें और यदि वह तरीका अच्छा हो तब उसे अपनायें अन्यथा नहीं। क्योंकि बुराई का अंत हमेशा बुरा ही होता है। ये गुरू घासीदास बाबा की सीख भी है।

ये तो हो गई व्यक्तिगत या पारिवारिक बातें। जब व्यक्ति, समाज बढ़ेगा तभी प्रदेश और राष्ट्र का विकास होता है। हमें अन्य विकसित समाज से सीख लेनी चाहिये। यहां यूपी, बिहारी, रीवाड़ी या केरलियन एक-दूसरे की मदद करके यहां जमते जा रहे हैं, परन्तु हमें छोटा सा गुरूद्वारा बनाना हो तो भी नहीं बना पाते। स्कूल-कालेज, बड़े 2 हास्टल चल रहे

हैं दूसरे समाज के। हम एक प्रायमरी स्कूल भी नहीं चला पा रहे हैं। हम छोटे-छोटे समिति बना कर हर महिने पैसा जमा करते हैं और आपस में ही खर्च कर देते हैं। क्या हम इन पैसों से कोई कोचिग सेंटर नहीं चला सकते ? किसी होनहार गरीब बच्चे को स्कालर शीप नहीं दे सकते। किसी गरीब बच्चे को डाक्टर या इंजीनियर नहीं बना सकते। हम जानते हैं, सब कर सकते हैं। जैसे समिति गठित कर उसे चलाने के लिए दृढ़ निश्चय करने तथा सदस्यों का सहयोग आवश्यक है उसी प्रकार इन कार्यों के लिए भी निश्चय कर सहयोग के साथ आगे आने की जरूरत है। हमें अन्य समाजों का अनुकरण करना होगा। हम अपनों के बीच अपने खोखले स्वाभिमान को लाकर एक नहीं हो पाते। इसके कारण ही एक-दूसरे में मतभेद उत्पन्न होते हैं। हम जिस स्वाभिमान की बातें करते हैं, उन्हीं के लिए क्या अन्य समाज के लोगों से हम भिड़ते हैं। कभी नहीं। केवल हम अपनों के बीच ही ऐसा करते हैं। एक-दूसरे का स्वाभिमान टकराता है और हम कब अहंकारी बन जाते हैं, पता ही नहीं चलता। हर व्यक्ति लीडर बनना चाहता है। जबकि :-

" लघुता से प्रभुता मिले, प्रभुता से प्रभु दूरी"

बड़े-बड़े ज्ञानी लोग अपने को दास कहलाकर भी महान बन गये। जैसे :- गुरूघासीदास, कबीरदास, तुलसीदास, भक्त रैदास इत्यादि। संत कबीर ने कहां है :-

(1) गाली आवत एक है, उलट होत अनेक।
कह कबीर नहिं उलटिये, वही एक की एक ॥

(2) साधू ऐसा चाहिये, जैसा सूप सुभाय।
सार सार को गहि रखै, थोथा देत उड़ाय ॥

इसके विपरीत हर व्यक्ति तामसी होता जा रहा है। इसका मुख्य कारण खान-पान तथा तनाव हैं। तंबाकू, गुटका, मांस मंदिरा तथा अन्य नशीली वस्तुओं का सेवन।लोग जिस बकरे को खाते हैं वह बकरा शुद्ध शाकाहारी होता है। बकरी का दूध औषधि का काम करता है। हिप्पो-पोटेमश, हाथी, घोड़ा आदि शुद्ध शाकाहारी होते हैं। उनकी शक्ति का अंदाज सभी को है। तामसी भोजन से क्रोध बढ़ता है , क्रोध को पागलपन कहा गया है। ये सब विनाश के कारक हैं।

मेरे ख्याल से दुनियां में कोई भी व्यक्ति पूर्ण ज्ञानी नहीं हो सकता। किसी क्षेत्र या विषय विशेष में ज्ञाता हो सकता है परन्तु पूर्ण ज्ञानी आजीवन नहीं बन सकता। अतएव जो बाते आपको नहीं मालूम, हो सकता है उसे आपका छोटा बच्चा बता दे। वर्तमान शिक्षा

(शेषभाग पृष्ठ 27 में)

सावन बरसे मेरी बस्ती में।

आया सावन बादल बरसे, नाचे वन के मोर।
गांवों की सन्नाटा में देखों झिंगुर मचाये शोर॥
काट खाये है पांव को कीड़े, देखो पीड़ा उनके पांवो में।
फिर भी मस्ती झूम रहे है, सच्ची आत्मा भारत की गांवों में॥
तन में कोई वस्त्र नही है, फिर भी मन क्यों गदगद है।
सह रहे थपेड़े हवाओं का, सागर सा मन क्यों निश्छल है।
डरा रही है काली घटाये, फिर भी मन क्यों निडर है॥
सूखी पाती नाच रही है, सवन की खुशियां मन भीतर है।
झूम ऊठी है गांव की नंदिया सागर लहराये मस्ती में।
गांव की बगिया महक उठी अब, सावन बरसे मेरी बस्ती में॥

मोहन डहरिया
सड़क नं. - 3, अशोक विहार कालोनी, पंडरीतराई, रायपुर

लिफाफा उद्योग

सामग्री -

1. सफेद या ब्राउन पेपर या रंगीन पेपर
2. लेई

उपकरण - कैंची, चाकू, पेपर कटर

विधि - पुराना लिफाफा के चिपके हुए भाग को पानी से हल्का गिलाकर निकालकर फैला ले लिफाफा बनाने वाले कागज पर रखकर उसी के अनुरूप कटिंग कर लें, जिस करह वह मोड़ा गया है उसी के अनुरूप मोड़कर उन्हें लेई से चिपका कर तैयार कर लें।

परिचय

सत्यध्वज के वरिष्ठप्रतिनिधि

नाम	-	**गणेशराम मिरी**
पिता	-	श्री फिरतूराम मिरी
जाति	-	सतनामी
जन्म तिथि	-	08-08-1968
स्थान	-	डूमहा-पो.-भण्डारपुरी व्हाया-खरोरा तह.-आरंग जिला-रायपुर (छ.ग.)
शिक्षा	-	एम.ए.(भूगोल, राजनीति वि.) एल.एल.बी.
विशेष योग्यता	-	N.C.C.NSS. योग प्रशिक्षित, स्काउट शिक्षक
व्यवसाय	-	शिक्षक
अभिरूचि	-	पठन-पाठन लेखन संगीत सुनना, पंथी नृत्य गीत, बागवानी, प्रकृति से लगाव
सम्मान	-	विद्यार्थी लाईफ-बेस्टवर्कर, रनर सत्यध्वज प्रतिनिधि /साहित्यकार सम्मान-1997
प्रतिनिधि	-	"सत्यध्वज पत्रिका"
कोषाध्यक्ष	-	जय सतनाम समिति भानसोज (आरंग)
आदर्श	-	परम् पूज्य गुरूघासीदास बाबा एवं डा.बाबा साहब अम्बेडकर
प्रेम	-	भारत भूमि, अपने गांव की मिट्टी
जीवन का उद्देश्य	-	मानव समाज की सेवा, सच्चे देशभक्त का निर्माण करने में सहायक बनना, बाबा जी के मार्ग पर चलते हुए समाज में शिक्षा, जागृति लाने का प्रयास करना, सतनाम का प्रचार करना।
संदेश	-	शिक्षित बनो, संगठित हो वक्त के साथ संघर्ष करने से मत चूको। अधिकारों को प्राप्त करो ? "जय सतनाम"

AnantNilesh84

मुद्रक :- आशा ऑफसेट प्रिंटर्स, सुपेला, भिलाई फोन : 5030566